DEPARTMENT OF MAITHILI

D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY MD MUNNA
(GUEST TEACHER)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA (BIHAR)

Date : 31 March - 01 April, 2020

'पृथ्वीपुत्रक' नाम करणक सार्थकता

आधुनिक मैथिली साहित्यक सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री 'ललित' रचित आंचलिक उपन्यास पृथ्वी –पुत्रक नामकरण कतेक दूरधरि सार्थक अछि एहि सम्यक विश्लेषण आवश्यक अछि।

कोनहु पोथीक नामकरण ओहि मे प्रति पारित घटना, भावना आदिक अभिव्यक्ति करवा मे समर्थ रहए से आवश्यक अछि। कोनो उपन्यासक नाम राखल जाइत अछि उपन्यासक कोनो प्रधान पात्रक नाम पर वा आहिमे घटित कोनो प्रसिद्ध घटनाक आधार पर अथवा कोनो–कोनो गौनो घटनाक आधार पर जे अपन छोटो अरितत्व सँ सम्पूर्ण कथा वस्तु कें प्रभावित करैत अछि, उपन्यासक नामकरण कएल जाइत अछि।

'पृथ्वी पुत्र' 'पृथ्वी' आ 'पुत्र' एहि दू शब्दसँ बनल अछि। एहिठाम पृथ्वी कें जननी मानल गेल अछि आ पुत्र सँ तात्पर्य अछि ओहि पृथ्वी माताक सेवा कएनिहार आर्थात् हरबाह वा मजदूर वर्गक वस्तुतः पृथ्वी पुत्र कहवैत अछि जे अपन खून (रक्त) पसेना एक कऽ कए पृथ्वी माताक सेवा करैत अछि। आर्तें एहि श्रमिक ओ कृषकक युग कें ध्यानमे राखैत एहि उपन्याषक नामक वा आन–आन पात्र सभक समायोजन उपन्यासकार भूमिहीन, मजदूर वर्गहि सँ कएलैन्ह अछि। कथावस्तु निम्न प्रकारें अछि।

'पृथ्वी पुत्र' एक गोट आंचलिक उपन्यास थिक आतें एहि उपन्यासक कथावस्तु पूर्णिया जिलाक एक गोट जमीन्दार जंग बहादुर छथि जे नौ सए बिघा जमीन मालिक बनल छथि आ दोसर दिल दुसध टोलीक प्रायः सभ व्यक्ति भूमिहीन आ श्रमिक अछिजे जमिन्दारहिक जमीन मे बसल अछि। ओ हुनकहि जमीन जोतिकोरि कए अपन जीवन यापन मे तमन्य अछि। जमीन्दारी प्रथाक उन्मूलन पश्चात सरकारी आदेशानुसार जकरा दखलकब्जा मे जतेक छैक सर्वे मे तकर खाता ओकरहि नाम सँ खुजि जाइत छैक किन्तु जंगबहादुरक कोपक कारर्णे के ओ ओहि जमीन पर अपन अधिकार कायम नहि कऽ पवैत अछि। एहि घटनाक तीन वर्ष वीति गेलाक पश्चात् सभ पूर्ववत् अपन–अपन फसिल कें ओहि मालिकक हिस्सा दऽ अबैत अछि। आ जे के ओ एहि विलम्ब करैक वा अनाकानी करैक तँ मालिक हँसेरीक बर्लें ओकर फसिल कटवा लैक। एहि तरहें जे जीवन पूंजीवाद ओ जमीन्दारक आघात सँ जीर्ण–शीर्ण भए गेल छल ओ आब असह्य भए गेल आ तखन ओहि दुसधटोली क विसेखीक बेटा 'सरूपा' ओहि दलित वर्गक नेतृत्व करवाक लेक आगू बढ़ल।

सरूपा चूँकि फारविसगंज, पूर्णिया, बनमनखी, परवाहा आदि हाट–बाजार, कोर्ट, कचहरी घूमि चुकल अछि। कतेको रास नेता सभक प्रगतिवादी भाषण ओ सुनि चुकल अछि आ नेता में शेषित आ शोषकक वर्ग–भेद बुझब मे आबिगेल छैक। ओ बुझि गेल अछिजे सरकार द्वारा प्रदत्त जमीन आब जमीन्दारक नहि अपितु हमारा सभके ओहि पर हमर अधिकार होत। भूमिकक मालिक तखन जे जमीन्दार अत्याचार करैत अछि तँ एकर विरोध करब आवश्यक अछि। इएह सिनचित अपन मकई तोडि आनलक, मालिक कें बाँटि कऽ नहि देलकैक। समस्या कें जटिल होइत देखि मालिक ओहि टोलक मनिजन जे मालिकक मुँह लगुआ छल तकरा बजा कहलकैक जे सभ केओ जँ हमरा अपन–अपन जमीन सुपुर्द कऽ देत तँ ओकरा सभकें हम आधा–आधा जमीन छोड़ि देबैक। ऐहि सन्दर्भ में दुसधटोलीक लोकक एक पंचायती बैसल आ ओहि जनसमुदायक मध्य मानजनि मालिकक प्रस्ताव कें राखलक। एहि प्रस्ताव कें सुनि सभ चुप्पी साधि लेलक, केओ प्रकट होमऽ नहि चाहैत छल तखन सरूपा उठल आ अपन विचार प्रकट करैत बाजल जे ''मालिक कें जमीन लोक सुपुर्दी करतैक किएक? सर्वे मे जखन हमरा सभक हिस्सा कायम भेलैक। सभक दखल कब्जामे जमीन छैक। मालगुजारीक सरकारी रसीद सभक नामे करिए रहलैक अछि तखन लोक कोन कानून सँ जमीन सुपुर्दी करतैक ? दोसर गप्प ई जे सभक जे उक्ति जे जमीन असलमे मालिकक छइक से कोना ? जँ जमीन ओकर रहितइक कानूनन तँ हमरा सभहिक हक हिस्सा ओइ जमीन पर कोना पहुँचइत ? हम सभ चूँकि एखन धरि मालिकक जमीन मानि अएलिएक अछि तें ओकर जमीन भेलैक। तखन तऽ मानले सँ जमीन ओकर लए सकैत अछि तँ आब हमरा ई मानय पड़त जे कानुन आबई जमीन हमर थिक। आ एहि पर हमर अधिकार होमऽक चाही। वास्तविकता तँ ई अछि जे धरतीमाता छथिन आ हिनकर जे सेवा करत ओ तकरे छथिन। जे हिनक बिनु सेवा कएनहि हिनक मालिक बनऽ चाहत ई तकरा त्यागि देथिन। एहि तरहें जखन सरूपा भरल पंचायती मे सभक अधिकार वो कर्तव्यक विश्लेषण कएलक, जनशक्ति कें उद्‌बोधित कएलक तखन सभमे एक अभूतपूर्व शक्तिक संचार भेलैक, सभमे आक्रोश उत्पन्न भेलैक आ सभ एक स्वरें बाजल जे आबहमहुँ सभ मालिक कें जमीन सुपुर्दी नहि करबैक।

एवम् प्रकारे आब सभई सोचबाक लेल बाध्य भऽ गेल जे जमीनदारक हँसेरीक सामना कोना करक चाही आ तखन सभी निश्चय कएलक जे सरूपा खेत पर जाए आ जखन संघर्षक समस्या आओत तँ हम सभ अपन–अपन अस्त्र–शस्त्र लऽ रनक्षेत्रमे उतरि मालिकक हँसेरी कें शोषित वर्गक शक्तिक परिचय देवैक। किन्तु मनुष्य जे सोचि अबैत अछि से कहाँ होइत छैक ? आ जे होइत छैक से असोचनीय रहैत अछि। विगत् योजनानुसार जखन सरूपा आ गेनवा दुनु भए अपन पटुआक खेत पर जाइत अछितँ हँसरीक संग ओकर पटुआ काटल जा रहल रहैक। सरूपा ई नहि देखि सकल आ दूनु भए भीड़ि गेल युद्धमे। कुसंयोगवश यावत् टोलक आर सभ केओ औतिएक तावत् सरूपा घायल भए चुकल छल आ गेनवाक शरीर भालाक आघात सँ जीर्ण–शीर्ण भए अपन अंतिम सांस गनि रहल रहैक। गेनवाक शरीरसँ निकलैत खून खेतक बओल कें सिंचित कऽ रहल रहैक आ से सभ मजदूर भूमिहीनक आँखिमे ताहिरूपें पाटि गेलैक जकरा ओ कहियो फराक नहि

कऽ सकैत अछि। परिणायतः इएह कहल जाए सकैत अछि जे जैं गेनवा पृथ्वी पुत्र कहएवाक योग्य छलर्तें ओ अपन खून सँ पृथ्वी कैं सिंचित कएलक। ओहि धरतीमाताक रक्षार्थ अपन प्रणक आहुति देलक। तखन सरूपा आ कि आन–आन भूमिहीन मजदूर कोना कऽ सुति सकैत छल। अन्ततोगत्वा सभ अपन–अपन जमीनक मालिक बनि गेल आ सरूपक खेत जे गेनबाक खून सँ सिंचित भेल छल फसिल लहलह छलैक आ श्री वएह पृथ्वीपुत्र कहा सकैत अछि। एहि तरहैं एहि उपन्यास मध्य ई देखयवाक प्रयास भेल अछि जे वास्तविक रूप मे पृथ्वी पुत्र के अछि आ पृथ्वीक मालिक के भऽ सकैत अछि।

अन्ततः हम कहि सकैत छी जे श्री ललित एहि उपन्यासक माध्यमे कृषक आ मजदूर वर्गक महत्ता कैं देखएवाये अत्याधिक सफल भेलाह अछि। समष्टि रूपे इएह कहब उचित जे धरती जोत निहारक थिक, हरबाहक थिक। वस्तुतः धतीक असल बेटा बएह थिक कारण ओ अपन पसेना स धरतीमाता कैं पूजइत अछि।

निष्कर्षतः औपन्यासिक तत्वक सापेक्षिक महत्वकें ध्यानमे राखैत हम कहि सकैत छी जे पृथ्वी पुत्र उदेश्य प्रधार उपन्यास थिक आई अपन उदेश्यकें प्राप्ति करवा मे पूर्ण सफलता कें पौलक अछि। एकर मुख्य उदेश्य पृथ्वीक वास्तविक पुत्रक परिचय पाठक कैं देनाय आ तदनुकूल नाना प्रकारक समस्या आ तकर समाधानक माध्यमे अपन उदेश्यक पूर्तिक संगहि सफल औपन्यासिक अन्तकें प्रदर्शित कएलक अछि आ तें हम कहि सकैत छी जे एकर नामकरण पूर्ण रूपेण सार्थक अछि।

MD MUNNA
Guest Teacher
Department of Maithili
Mob - 9931488030